बालक ज्ञान का स्वयं निर्माता

दिपीका कुमारी*
गणेश प्रसाद साव**

नयी पीढ़ी के बच्चों में माता-पिता, भाई-बंधु, समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व बोध (विशेषकर नैतिक एवं चरित्र व्यवहार) में कुछ हद तक पतन हुआ है। अकसर इसके लिए हम बच्चों को ही ज़िम्मेदार मानते हैं, परंतु इनके इस प्रकार के व्यवहार निर्माण में अभिभावकों एवं समाज के लोगों की भी अहम भूमिका होती है। बच्चे अपने ज्ञान निर्माण के समय जब बड़े लोगों के साथ अंतर्क्रिया करना चाहते हैं, तब उन्हें बड़े व्यक्तियों से जो तिरस्कार एवं झुँझलाहट सहना पड़ता है, वह उनके समाजीकरण में सबसे बड़ा बाधक है। कभी-कभी वयस्क व्यक्तियों को यह भ्रम हो जाता है कि हमने बच्चे को पहले सिखाया या बताया था, फिर भी वह गलती करता है और हम यह कहते हैं कि उसने अपना दिमाग लगाया होगा, इसकी क्या आवश्यकता थी? या फिर उसमें सीखने कि क्षमता नहीं है। दोनों ही स्थिति में उनमें हीनभावना उत्पन्न होती है, जो बच्चों के साथ उनके व्यवहार को असामान्य करता है। कैसे हम बड़े बच्चों के ज्ञान निर्माण में बाधक हैं? इसमें हमारी क्या भूमिका है? इस प्रश्नों का उत्तर हमें वाइगोत्सकी के सामाजिक निर्माणवादी सिद्धांत (Social Constructivism Theory) से मिलता है। "वाइगोत्सकी" ने हमारी मानसिक क्रियाओं को दो भागों—प्राथमिक मानसिक क्रिया एवं उच्च मानसिक क्रिया में विभाजित किया। प्राथमिक मानसिक क्रिया, जैविक प्रक्रियाओं पर आधारित होती है। उच्च मानसिक क्रिया, निम्न मानसिक क्रियाओं पर आधारित होती है। उन्होंने समाज की संस्कृति अर्थात् भाषा, चिह्न, संकेत आदि को मध्यस्थ साधन (Meditational means) का संज्ञान देते हुए उच्च मानसिक क्रियाओं के संपादन में उनकी भूमिका पर बल दिया। मध्यस्थ साधन, बालक को अधिक कुशल वयस्क द्वारा प्राप्त होते हैं एवं मध्यस्थ साधन का विकास तभी होगा जब बालक एम.के.ओ. (More Knowledge Other) के संपर्क में आएँगे एवं उनके साथ अंतर्क्रिया करेंगे। उन्होंने मध्यस्थ साधन के विकास में संभावित विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development – ZPD) की भूमिका की ओर भी ध्यान केंद्रित किया। इसके अतिरिक्त, "वाइगोत्सकी" के अनुसार कोई ऐसा एक कारक नहीं है जो बालक के संज्ञानात्मक विकास को सरलता से परिभाषित कर सके। इसलिए उन्होंने बालक के संज्ञानात्मक विकास में बालक के जीवन से संबंधित संपूर्ण इतिहास के अध्ययन पर बल दिया। इस लेख में उनके सिद्धांत एवं वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया गया है।

* *प्रशिक्षु-शिक्षक*, (बी.एड), बहरागोड़ा महाविद्यालय, बहरागोड़ा, झारखंड 832 101

** *सहायक प्राध्यापक* (बी.एड), चतरा महाविद्यालय, चतरा, झारखंड 825 401

प्रकृति ने मनुष्य को सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। ज्ञान ही मानव को सभी प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ प्राणी का दर्जा दिलाता है। ज्ञान सभी के पास हो सकता है, परंतु परिस्थिति के अनुरूप उचित ज्ञान का प्रयोग करके व्यवहार में उचित परिवर्तन करने वाला ही ज्ञानी होता है। बुद्धि के आधार पर ही व्यक्ति अपने समक्ष उपस्थित परिस्थिति के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है एवं अपने ज्ञान का निर्माण एवं विस्तार करता है अर्थात् बुद्धि वह क्षमता है जिससे मानव ज्ञानार्जन करता है। वाइगोत्सकी के अनुसार, "बुद्धि, निर्देश के आधार पर सीखने की क्षमता है।" अतः बालक अपने बौद्धिक क्षमता के अनुरूप समाज एवं परिवार के सदस्यों द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुरूप अपनी ज्ञान की संरचना करता है।

ज्ञान का शाब्दिक अर्थ ठोस विश्वास से है, जो जानने, निर्देश देने, प्रकाशित करने, सीखने और क्रियात्मक निपुणता की ओर संकेत करता है। ज्ञान शब्द का आशय एक निश्चित जानकारी जो ज्ञात है, से है। बालक जैसे-जैसे नए-नए तथ्यों से परिचित होता है, वैसे-वैसे वह ज्ञान का निर्माण अपनी ज्ञानेंद्रियों का प्रयोग करके करता है। वास्तव में, ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव, बौद्धिक होते हैं। बुद्धि के अभाव में सामान्यतः ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। मानव मस्तिष्क द्वारा विकसित समस्त तथ्य, सिद्धांत और विश्वास संगठित रूप से ज्ञान कहलाता है। अतः हम कह सकते हैं कि ज्ञान वह बौद्धिक अनुभव है, जो ज्ञानेंद्रियों के निर्देशन अनुरूप प्रयोग से प्राप्त होता है। ज्ञान और बुद्धि एक-दूसरे के पूरक हैं, जो व्यक्ति जितना ज्ञानी होता है, उसे उतना बुद्धिमान माना जाता है।

बालक अपने ज्ञान एवं बुद्धि का निर्माण किस प्रकार करता है? इस बात पर अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपना मत दिया, जैसे — 'पियाज़े', 'आसुबेल', 'वाइगोत्सकी' एवं 'ब्रुनर' आदि। उनमें से वाइगोत्सकी पहले मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने इस बात पर बल दिया कि बालक अपने ज्ञान का निर्माण सामाजिक अंतर्क्रिया के माध्यम से करता है।

'लिव सिमनोविच वाइगोत्सकी' का जन्म 19 नवम्बर, 1896 को रूस के ओरसा नामक स्थान पर हुआ था। उनका मुख्य कार्य क्षेत्र विकास मनोविज्ञान था। उन्होंने बच्चो में उच्च संज्ञानात्मक कार्यों के विकास से संबंधित एक सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसे सामाजिक निर्माणवादी (रचनात्मक) सिद्धांत (Social Constructivism Theory) के नाम से जाना जाता है। वस्तुतः वाइगोत्सकी ने बालक के संज्ञानात्मक विकास में समाज एवं उनके सांस्कृतिक संबंधों के बीच संवाद को एक महत्वपूर्ण आयाम घोषित किया। अपने जीवन के आरंभिक काल में उनका तर्क था— बालक अपनी तर्कशक्ति का विकास चिह्नों एवं प्रतीकों के माध्यम से करता है। पियाज़े की भाँति उनका भी मत था कि बालक ज्ञान का निर्माण करते हैं, परंतु उनका मानना था कि बालक अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं नहीं करते हैं, बल्कि अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में करते हैं। वाइगोत्सकी की मृत्यु 11 जून, 1934, (आयु 37 वर्ष) में हो जाने के कारण उनके अनेक सिद्धांत अधूरे रह गए।

ज्ञान का निर्माण

वाइगोत्सकी मानते थे कि बालक ज्ञान का निर्माण दूसरों से अंतर्क्रिया एवं संप्रेषण द्वारा करता है।

उनके अनुसार, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों का उत्पाद है। उन्होंने सामाजिक अंतर्क्रिया को ज्ञान निर्माण के लिए एक बाह्य बल कहा। वाइगोत्सकी के सिद्धांत के अनुसार ज्ञान बाह्य वातावरण में स्थित होता है अर्थात् ज्ञान विभिन्न व्यक्तियों, जैसे — अभिभावक, शिक्षक, अधिक कुशल सहयोगी, मित्र आदि एवं वातावरण, जैसे — किताबों, मानवीय निर्मितियों इत्यादि में वितरीत रहता है। ज्ञान बाह्य वातावरण एवं व्यक्तियों के साथ-साथ समुदाय में भी व्याप्त रहता है एवं बालक इन सब से अंतर्क्रिया करते हुए ज्ञान का निर्माण करता है। जब बालक इन सबसे अंतर्क्रिया करता है तो उसे इन सबसे पृष्ठपोषण प्राप्त होता है। पृष्ठपोषण प्राप्त करने के उपरांत वह अपने व्यवहार में सुधार लाता है एवं पुनः सुधारे गए व्यवहार से अंतर्क्रिया करता है। जिसके आधार पर पुनः उसे पृष्ठपोषण प्राप्त होता है और इस प्रकार बालक उत्तरोत्तर सुधार करके वास्तविक ज्ञान या व्यवहार प्राप्त करता है या करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार, वाइगोत्सकी के अनुसार दूसरों के साथ अंतर्क्रिया और सहयोगात्मक क्रियाओं द्वारा जानने की प्रक्रिया, गुणात्मक रूप से अन्य माध्यमों से जानने की प्रक्रिया से श्रेष्ठ होती है। उन्होंने लिखा है, "Knowledge is not simply constructed, it is co-constructed." वाइगोत्सकी के इन शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि हमारे स्वयं का विकास दूसरों के द्वारा होता है अर्थात् संज्ञानात्मक विकास एकाकी नहीं हो सकता, यह भाषा विकास, सामाजिक विकास यहाँ तक कि शारीरिक विकास के साथ-साथ उपस्थित सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में होता है।

वाइगोत्सकी ने भाषा को ज्ञान निर्माण का साधन माना है, क्योंकि भाषा ही अंतर्क्रिया का सर्वोत्तम साधन है। बालक अपने समुदाय से अंतर्क्रिया करके ज्ञान का निर्माण भाषा द्वारा ही करता है। उनके अनुसार, भाषा, समाज द्वारा दिया गया प्रमुख सांकेतिक उपकरण है, जो कि बालक के संज्ञानात्मक विकास में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वाइगोत्सकी ने बालकों द्वारा विभिन्न नये-नये शब्दों एवं पदों का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है, इसके लिए उन्होंने बताया कि बालक कभी-कभी संप्रेषण के दौरान ऐसे शब्दों का प्रयोग कर लेता है, जिनका अर्थ अथवा उनकी सही समझ उनमें नहीं होती है अर्थात् बालक में उस शब्द की अवधारणा नहीं होती है एवं संप्रेषण में ऐसे शब्द का प्रयोग करने का परिणाम यह होता है कि वह धीरे-धीरे उस शब्द की अवधारणा स्पष्ट कर लेता है, जैसे — कक्षा में जब बालक के सामने कोई नया शब्द या गणितीय चिह्न (जो उसके Syllabus में है) आता है, तब वह उस शब्द को मित्र-समूह के वार्तालाप में प्रयोग करता है तथा उस शब्द को विभिन्न विषय-वस्तु के साथ भी जोड़ता है। जिससे बालक में शब्द की अवधारणा पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है एवं उस शब्द को विभिन्न विषय-वस्तु के साथ जोड़ने से भी ज्ञान का निर्माण हो जाता है। परंतु वाइगोत्सकी के अनुसार बालक अपने ज्ञान का निर्माण समुदाय से दूर स्वतः नहीं कर सकता। ज्ञान का निर्माण वह अपने अभिभावक, शिक्षक, समुदाय, मित्र-समूह में अंतर्क्रिया करके ही

करता है। अंतर्क्रियाओं के द्वारा बच्चे अपने समुदाय की संस्कृति, जैसे— सोचने और व्यवहार करने के तरीके को सीखता है। उन्होंने इस संबंध में अपना मत देते हुए कहा, "He does not choose the meaning of his word... the meaning of the words is given to him in his conversation with adults."

मुख्य अवधारणाएँ

वाइगोत्सकी ने चार मुख्य अवधारणाएँ दी हैं —

- प्रारंभिक मानसिक एवं उच्चतर मानसिक प्रक्रिया;
- उच्च मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में मध्यस्थ साधन की भूमिका;
- मध्यस्थ साधन के विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों का महत्व; एवं
- व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को समझाने के लिए विकासात्मक उपागम का महत्व।

प्रारंभिक मानसिक प्रक्रिया एवं उच्च मानसिक प्रक्रिया

वाइगोत्सकी ने बालक की मानसिक प्रक्रिया को दो भागों में विभाजित किया —

(i) प्रारंभिक मानसिक प्रक्रिया और
(ii) उच्च मानसिक प्रक्रिया

(i) *प्रारंभिक मानसिक प्रक्रिया*

प्रारंभिक मानसिक प्रक्रिया जैविक आधारित होती है एवं इनमें आधारभूत संज्ञानात्मक प्रक्रिया का निर्माण होता है। यह बालक के भीतर स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है एवं इसके लिए बालक को किसी प्रकार के अनुभव की आवश्यकता नहीं होती, जैसे— रोना, हँसना, प्रतिमा बनाना, भावों को व्यक्त करना, अनुभूति एवं घटनाओं की छाप इत्यादि।

(ii) *उच्च मानसिक प्रक्रिया*

उच्च मानसिक प्रक्रियाएँ सांस्कृतिक अनुभवों द्वारा संचालित होती हैं। यह प्रक्रियाएँ जटिल होती हैं एवं प्रारंभिक मानसिक प्रक्रियाओं की क्षमताओं का सम्मिश्रण होता है। उच्च मानसिक प्रक्रियाएँ न केवल प्रारंभिक मानसिक प्रक्रियाओं का जटिल रूप होती हैं, बल्कि यह समुदाय की ऐतिहासिक संस्कृति की विशेषताओं का सम्मिश्रण होती हैं। ऐतिहासिक संस्कृति की विशेषताओं का अर्थ है— समुदाय की संस्कृति जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। ऐतिहासिक संस्कृति की विशेषताओं का, बालक में स्थानांतरण अधिक कुशल वयस्क द्वारा होता है, जैसे — भाषा, चिह्न, संकेत आदि जो बालक के समुदाय की संस्कृति में प्रचलित होते हैं।

स्मृति, प्राथमिक एवं उच्च मानसिक प्रक्रिया दोनों की उत्पाद है। प्राथमिक मानसिक प्रक्रिया में प्रतिमा, घटनाओं की छाप अथवा अनुभूति आती है एवं उच्च मानसिक प्रक्रिया में उस घटना से संबंधित संकेत या लिपि आते हैं, जिससे वे अपने मस्तिष्क में इसे संयोजन करके रख पाते हैं।

उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में मध्यस्थ साधन की भूमिका

वाइगोत्सकी के अनुसार, संकेतों एवं औज़ारों का प्रयोग कर मानसिक प्रक्रियाओं का संपादन करना, व्यक्ति की बुद्धि पर निर्भर करता है। उनके

अनुसार संज्ञानात्मक विकास को समझने के लिए उन औज़ारों का परीक्षण करना अति आवश्यक है, जो संज्ञानात्मक विकास में मध्यस्थता करते हैं, उच्च मानसिक प्रक्रिया में मध्यस्थ साधनों की भूमिका अत्यधिक होती है, जैसे — जब व्यक्ति के सामने कोई शब्द, जैसे — कौआ, लिखित अथवा मौखिक रूप से आता है एवं कौआ के बारे में कुछ बोलने के लिए बोला जाए तो कौआ शब्द सुनते अथवा पढ़ते ही उसके मस्तिष्क में एक छवि बनती है, वह प्राथमिक मानसिक प्रक्रिया है एवं व्यक्ति जो भी शब्द, संकेत अथवा चिह्न कौआ के लिए प्रयोग करेगा, वह उच्च मानसिक प्रक्रिया है। वाइगोत्सकी के अनुसार, कौआ शब्द एक मध्यस्थ साधन है, जो उच्च मानसिक प्रक्रिया के संपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बालक मध्यस्थ साधन का निर्माण अथवा अर्थ स्वयं नहीं चुनता, बल्कि उसका अर्थ उसे अपने समुदाय के अधिक कुशल व्यक्तियों से अंतर्क्रिया द्वारा प्राप्त होता है। अर्थात् समुदाय के लोग ही अपने समुदाय की संस्कृति (कोडिंग, भाषा, संकेत, व्यवहार के तरीके आदि) का स्थानांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करते हैं। स्थानांतरण की यह प्रक्रिया अधिक कुशल वयस्क से कम कुशल वयस्क में होती है।

इसके लिए उन्होंने एक शब्द एम.के.ओ. (More Knowledge Other) का प्रयोग किया जो मध्यस्थ साधन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एम.के.ओ. से तात्पर्य उस व्यक्ति अथवा स्वतः व्याख्यात्मक या स्पष्ट करने वाले (Self-explanatory) से है, जो किसी विशिष्ट अवधारणा अथवा प्रक्रिया में अधिगमकर्ता या बालक से अधिक कुशल ज्ञानी हो। एम.के.ओ. केवल शिक्षक अथवा वयस्क ही नहीं हो सकते, बल्कि बालक के साथी अथवा अग्रज भी हो सकते हैं। एम.के.ओ.कौन है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि बालक किस क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त कर रहा है, जैसे — सोशल मीडिया में, नए मोबाइल गेम को खेलने, नवीन फ़िल्म का ट्रेलर आदि के क्षेत्र में बालक के अभिभावक या शिक्षक की अपेक्षा उसके साथी अथवा अनुज अधिक कुशल हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, चिह्न, कोड, संकेत आदि उनके अनुसार उद्दीपक अथवा बाह्य बल नहीं होते हैं जो बालक को प्रतिक्रिया देने के लिए बाध्य करें, बल्कि ये अर्थ का निर्माण करते हैं जो बालक द्वारा सीखा एवं ग्रहण किया जाता है। बालक इस प्रकार के चिह्न या कोड के अर्थ का निर्माण एम.के.ओ. के साथ अंतर्क्रिया के माध्यम से करता है। इस प्रकार, अपने समुदाय के एम.के.ओ. की मध्यस्थ साधन के रूप में बालक को शब्दों का अर्थ समझाने में मुख्य भूमिका रहती है।

वाइगोत्सकी के सिद्धांत में भाषा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वे यह मानते हैं कि भाषा संज्ञानात्मक विकास का महत्वपूर्ण औज़ार है। भाषा, बालक की बौद्धिक क्षमताओं के विकास को उपयुक्त दिशा प्रदान करती है, क्योंकि भाषा ही एक माध्यम है, जिसमें वे अपने विचारों को दूसरे के सामने अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं। साथ ही भाषा मध्यस्थ साधन को एक निश्चित रूप प्रदान करती है।

मध्यस्थ साधन के विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों का महत्व

बौद्धिक विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सहयोग को जानने के लिए वाइगोत्सकी ने बालक की सामाजिक अंतर्क्रिया की ओर ध्यान केंद्रित किया। उनके अनुसार अंतर्क्रिया बालक को अभ्यास करने का अवसर प्रदान करती है एवं उनका संज्ञानात्मक कौशल का विकास करने में सहायता करती है। क्योंकि अंतर्क्रिया द्वारा ही उच्च स्तर का संज्ञानात्मक विकास होता है। अधिक कुशल वयस्क (एम.के.ओ.) से अंतर्क्रिया करके ही बालक अपना व्यक्तिगत संज्ञानात्मक विकास कर पाता है एवं इस बात का ज्ञान होता है कि बालक स्वयं से क्या-क्या करने में समर्थ है? वाइगोत्सकी ने संभावित विकास का क्षेत्र का प्रयोग किया (Zone of Proximal Development — ZPD)। यह उस अंतर को परिभाषित करता है जो कि बालक के द्वारा बिना किसी सहायता से किए गए निष्पादन तथा किसी वयस्क या अधिक कुशल साथी की मदद से किए गए निष्पादन में होता है। दूसरे शब्दों में, बालक जो कर रहा है तथा जो करने की क्षमता रखता है, के बीच का क्षेत्र ज़ेड.पी.डी. कहा जाता है, जैसे — बालक अपने गुल्लक में रखे सिक्कों को गिनता है। यदि बालक 10 तक गिनने में सक्षम है तो वह इससे आगे की सिक्कों की गणना स्वयं नहीं कर सकता एवं आगे की गणना करने के लिए वह अपने से कुशल वयस्क की सहायता लेगा अथवा वयस्क द्वारा उसे सहायता करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। इस क्रम में वह अंतर्क्रिया के माध्यम से 10 से आगे की गणना करना सीखेगा। अंतर्क्रिया द्वारा ही उसे अपनी क्षमता (स्वयं की) से अधिक अनुभवों में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार के अनुभव से बालक अपने ज्ञान का निर्माण एवं विस्तार करता है। इससे दो तथ्य स्पष्ट होते हैं —

(i) बालक बौद्धिक स्तर से परिपक्व होने के कारण ही इस अंतर्क्रिया में भाग ले पाया तथा वयस्क द्वारा दिए गए नवीन ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता से अंतर्क्रिया की प्रक्रिया संपन्न हो पाई।

(ii) इसके विपरीत अगर वयस्क, बालक का सहयोग नहीं करते एवं इस बात पर डटे रहते कि बालक आगे की गणना स्वयं कर सकता है

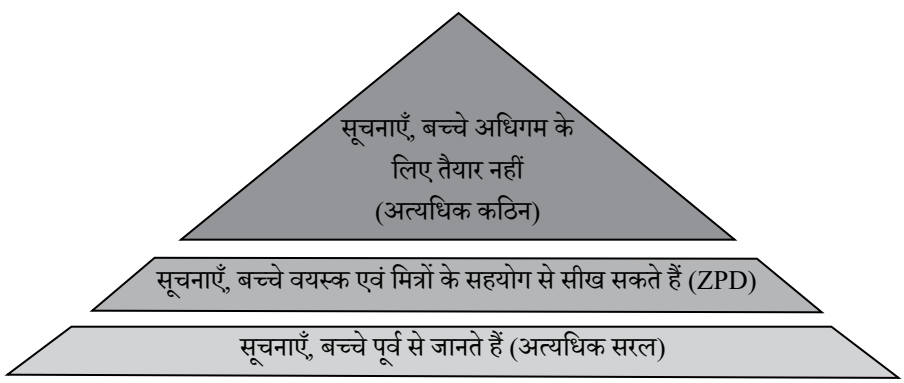

चित्र 1

अथवा बालक आगे की गणना करने की क्षमता नहीं रखता तो यह अंतर्क्रिया नहीं होती एवं बालक नवीन ज्ञान का निर्माण नहीं कर पाता। चित्र 1 में ज़ेड.पी.डी. को दर्शाया गया है—

इस प्रकार बालक अपने वास्तविक विकास स्तर से आगे बढ़कर भी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, यदि उन्हें थोड़ा निर्देश मिल जाए। वाइगोत्सकी के अनुसार संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक अनुभव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह मध्यस्थ साधन की सहायता से उच्च मानसिक प्रक्रियाओं के संपादन में तथा आधारभूत संज्ञानात्मक क्षमताओं को ग्रहण करने में सहायता करता है। उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि बालक, सामाजिक अंतर्क्रिया द्वारा ही 10 से आगे की संख्या के लिए मध्यस्थ साधन को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार, सामाजिक अनुभव मध्यस्थ साधन के निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को समझने के लिए विकासात्मक उपागम का महत्व

वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को समझने के लिए एक विकासात्मक उपागम की आवश्यकता है, जो इसका शुरू से परीक्षण करे तथा विभिन्न रूपों में हुए परिवर्तनों को ठीक से पहचान पाए। विकासात्मक उपागम, एक व्यक्तिगत भाषा है, जिसमें बालक अपने व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करने के लिए स्वयं से बातचीत करता है तथा संभावित विकास का क्षेत्र (ज़ेड.पी.डी.) अर्थात् दूसरों के सहयोग से सीखने की क्षमता, दोनों के गत्यात्मक परिवर्तन का निरीक्षण विकासात्मक उपागम में किया जाता है। साथ ही साथ यह भी देखा जाता है कि बालक समुदाय की संस्कृति, जैसे—चिह्न, उपकरण, भाषा आदि अर्थात् मध्यस्थ साधनों का कितना प्रयोग कर पा रहा है, जो उसके बौद्धिक संगठन में सहायता करता है।

वाइगोत्सकी के अनुसार, ऐसा कोई भी अकेला संदर्भ, तथ्य अथवा कारण नहीं है जो मानसिक प्रक्रियाओं का विकास एवं उनकी कार्य संपादन प्रक्रियाओं का वर्णन कर सके। वाइगोत्सकी ने उच्च मानसिक प्रक्रिया के विकास के पीछे व्यक्ति के जीवन के इतिहास की ओर ध्यान केंद्रित किया। ये इतिहास निम्नलिखित है —

(i) *सामान्य/साधारण सांस्कृतिक इतिहास*

इसके अंतर्गत व्यक्ति के सामाजिक पहलू आते हैं। सामाजिक पहलू अर्थात् जो प्रत्यक्ष रूप से बालक से जुड़ी नहीं होती है, बल्कि उसके किसी पूर्वज से जुड़ी घटना अथवा कोई संवेग है जो उसकी चिंतन प्रक्रिया या विचारों को प्रभावित करता है, अर्थात् इसके अंतर्गत बालक के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी बातें आती हैं, जो बालक की चिंतन प्रक्रिया या विचारों को प्रभावित करती हैं।

(ii) *सात्विक इतिहास*

इसका संबंध व्यक्तिगत जीवन से है एवं इसके अंतर्गत वे सभी जैविक प्रक्रियाएँ आती हैं जो मूल मानसिक प्रक्रियाओं के विकास को नियमित करती हैं। इसके अतिरिक्त, वे सभी

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ आती हैं, जो उच्च मानसिक प्रक्रिया को नियमित करती हैं अर्थात् सात्विक इतिहास का व्यक्तिगत विकास एवं जीवन से जुड़े हुए सामाजिक विकास का उसके संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, को प्रदर्शित करता है।

(iii) *उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से संबंधित इतिहास*

उच्च मनौवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से संबंधित इतिहास, विशिष्ट मानसिक प्रक्रिया (यथा स्मृति) का व्यक्ति के संपूर्ण जीवन में होने वाले परिवर्तन का परीक्षण करती है। जिसे व्यक्ति अपने चारों ओर के वातावरण, जिसमें वह रहता है, से प्राप्त करता है।

(iv) *व्यक्तिगत सीखने के अनुभव से संबंधित इतिहास*

इसके अंतर्गत ऐसे व्यवहार आते हैं जो सूक्ष्म रूप से परिवर्तित होते हैं, जो स्वयं करने की एवं किसी की सहायता से सीखने की क्षमता रखते हैं, उनके बीच के क्षेत्र को पूर्ण करने वाले व्यवहार सीखने के अनुभव से संबंधित इतिहास के अंतर्गत आते हैं।

इस प्रकार, मानसिक प्रक्रियाओं का विकास एवं उनकी कार्य संपादन प्रक्रियाओं में व्यक्ति के जीवन से संबंधित इतिहास की भूमिका रहती है।

वर्तमान समय में प्रासंगिक निहितार्थ

1. अंतर्क्रिया का सबसे सर्वोत्तम साधन भाषा होने के कारण वाइगोत्सकी ने भाषा को ज्ञान निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना है।
2. बालक ज्ञान का निर्माण अपने समुदाय से दूर सामाजिक सहयोग के बिना नहीं कर सकता। बालक जब अधिक कुशल वयस्क के साथ अंतर्क्रिया करता है एवं उनसे फ़ीडबैक (पृष्ठपोषण) प्राप्त करता है, तब प्राप्त फ़ीडबैक से अपने व्यवहार में सुधार लाता है एवं पुनः सुधारे व्यवहार के साथ अंतर्क्रिया करता है। इस प्रकार, बालक उत्तरोतर सुधार करके वास्तविक ज्ञान या व्यवहार प्राप्त करता है या करने की चेष्टा करता है। इसलिए बच्चों को उनके समुदाय सदस्यों से बातचीत करने में रोक-टोक नहीं करनी चाहिए। खास करके एकल परिवार में बच्चों को बंद करके रखने का, उनके ज्ञानात्मक स्तर पर बुरा असर पड़ता है।
3. बालक के ज्ञान निर्माण में उसके साथियों की अहम भूमिका होती है। इसलिए उन्हें इनसे मिलने-जुलने में रोक नहीं लगानी चाहिए।
4. बच्चों को उचित वातावरण एवं अवसर मिलने पर वे अपनी आयु से बढ़कर भी कार्य कर सकते हैं। इसलिए उनकी आयु से बढ़कर कार्यों में भी उन्हें अंतर्क्रिया करने का अवसर प्रदान करना चाहिए, न कि उनसे छिपा या उन्हें चुप बैठाकर करना चाहिए।
5. बालकों के अनुपयुक्त शब्दों या संकेतों के प्रयोग करने पर उन्हें डाँटना-फटकारना नहीं चाहिए। बल्कि उन्हें शब्दों या संकेतों के वास्तविक अर्थ एवं प्रयोग करना बताना चाहिए।
6. बालकों के बौद्धिक एवं ज्ञानात्मक पक्ष पर उनकी संस्कृति एवं समाज की अमिट छाप रहती है। परंतु कुछ अभिभावक उच्च संस्कृति तथा समाज से सिखाने में समय की बर्बादी एवं ज्ञानवर्धक न होने की दृष्टि से सांस्कृतिक एवं

सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने में बच्चों को रोकते हैं।

7. कोई भी ऐसा एकल कारक नहीं है जो बालक की मानसिक क्रियाओं के विकास एवं उसकी कार्य संपादन की व्याख्या कर सके। अतः बालकों को किसी एक गुण-दोष के आधार पर कोसना गलत है।
8. संज्ञान एवं ज्ञान का विकास एकाकी नहीं होकर संयुक्त रूप से सभी पक्षों, जैसे — भाषा, शारीरिक एवं सामाजिक आदि विकास के साथ-साथ होता है। इसलिए बालकों को बिना रोक-टोक सभी सकारात्मक क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
9. खेल संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक साधन है एवं बालक इसके द्वारा ज्ञान का निर्माण करता है।
10. एम.के.ओ. की भूमिका बच्चों के ज्ञान निर्माण में अहम है। अतः बच्चों को (प्रतिपालक) की सुविधा उपलब्ध करानी चाहिए।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ज्ञान का निर्माण व्यक्ति अपनी बैद्धिक क्षमता के अनुरूप करता है। सामाजिक रचनात्मकता सिद्धांत (Social Constructivist Theory) के अनुसार बालक अपने ज्ञान का निर्माण समुदाय में विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंतर्क्रिया के माध्यम से करता है। बालक अपनी क्षमता से अधिक अनुभवों में भाग लेने में समर्थ है, केवल उसे निर्देश की आवश्यकता होती है एवं यह निर्देश उसे एम.के.ओ. से अंतर्क्रिया के माध्यम से प्राप्त होता है।

संदर्भ

देहम्स, जियोनोटी, पसलक्का, वेत्ज़ेल और जुल्कोस्की (एनएम). *दि एजुकेशन थ्योरी ऑफ़ लीव वाइगोत्सकी — एन एनालिसिस*. studylib.net/doc/5854258/the-educational-theory-of-lev-vygotsky--an-analysis

रूथ, ए. और क्लास 2011. स्टूडेंट – सेंटर्ड पेडागोजी — को-कंस्ट्रक्शन ऑफ़ नॉलेज थ्रू स्टूडेंट-जेनेरेटेड मिडटर्म एक्ज़ाम्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ टीचिंग एंड लर्निंग इन हाइयर एजुकेशन*. 23 (2). http://www.isetl.org/ijtlhe/

बर्जर, एम. (एनएम) वाइगोत्सकीस थ्योरी.
https://www.emis.de/proceedings/PME29/PME29RRPapers/PME29Vol2Berger.pdf

डीव्रीस, आर. 2000. *वाइगोत्सकी, पियाजे एंड एजुकेशन — ए रेसीप्रोकल असीमिलेशन ऑफ़ थ्योरीज़ एंड एजुकेशनल प्रैक्टिसेस*. www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0732118X00000088

कॉक्स, जियरी, ब्रोगन आमद सिंगर. 2009. *कोग्निटिव डिवेलपमेंट*.
file:///D:/supportig%20Doct%20of%20ph.%20d%20tool/Cognitive%20Development%20%20%20Education.com.htm